

Living the

LOTUS

Buddhism in Everyday Life

10 2017

VOL. 145

Founder's Essay

सुसंस्कृत मन

“संस्कृति विद्यालय” नामक निजी सतत शिक्षा अकादमी का आजकल बहुत प्रचलन है। इस अर्थ में “संस्कृति” साहित्य और कला के साथ संपर्क के माध्यम से अपने आप को सुधारने और परिष्कृत करने का संकेत देता है। शब्द का यह अर्थ उसके मूलार्थ एक भूखंड को “जोतकर खेती लायक बनाने” से आया है। जिसका मस्तिष्क जुताई से नमनशील और लचीला है, वह वास्तव में एक सुसंस्कृत व्यक्ति माना जाता है।

जिस तरह अच्छी तरह जुती हुई भूमि, जो अपनी धरती पर लगाई गई किसी भी फसल को स्वीकार और उसका पोषण करेगी, उसी तरह हम अपने मस्तिष्क को व्यापक ज्ञान से परिपूर्ण करके पूर्वाग्रह एवं रूढ़िवादी विचारों से मुक्त रख सकते हैं, ताकि हम चीजों को कई दृष्टिकोण से देख सकें। परन्तु वैसे लोग भी हैं जो, यदि लापरवाह हैं तो, मस्तिष्क में खचाखच भरे सभी विचारों को अस्त्रशस्त्र के समान चलाने के बजाय, इसे लोगों को नीचा दिखाने के

लिए चलाते हैं, और दूसरों की सुनने के प्रति अनिच्छा का विकास कर लेते हैं।

पुण्डरीक सूत्र में एक मुहावरा है जो उनकी बातें करता है “वह जो कुशल कार्य करते हैं, विनीत एवं खरे स्वभाव के हैं।” सच्चा सुशिक्षित व्यक्ति बनने के लिए बौद्धिक शिक्षा को आगे बढ़ाने के साथ दूसरों की सेवा करना आवश्यक है। “अच्छे कर्मों” के संग्रह से सूत्र का यही अभिप्राय है।

दूसरों की खुशियों के लिए कभी एक भी काम किये बिना ही, सिर्फ अपनी विद्वता बढ़ा लेने के लिए अध्ययन करना, हृदय और मन को परिमार्जित करने से काफी दूर है, सिर्फ व्यापक ज्ञान से सशक्त एक स्वधर्मी व्यक्ति की ओर अग्रसर करता है। यह मन में एक नीतिवचन लाता है: “परिवर्तन सीखी हुई विद्या का एक प्रमाण है।”

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), p. 42-43

Living the Lotus
Vol. 145 (October 2017)

Senior Editor: Shoko Mizutani
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेंट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।



दुखों और कठिनाई के माध्यम से आगे बढ़ना

निचिको निवानो, प्रेसिडेण्ट,
रिश्शो कोसेइ काइ

दुख एक मूल्यवान अनुभव है

कोई भी दुःखों या कठिनाइयों को सहन नहीं करना चाहता है। तथापि, चाहे लोग कितने भी खुश नजर आये, हालांकि डिग्री का अंतर हो सकता है, पर निश्चित रूप से उन्हें एक या दो चिंताएँ रहती हैं।

मैंने कई बार ऐसे मामलों के बारे में सुना है जिसमें किसी को अनेक दुःखों और कठिनाइयों से गुजरना पड़ा है, जो बाद में उसकी आध्यात्मिक संपत्ति बन गई। संस्थापक निक्क्यो निवानो को, जिनके निर्वाण में प्रवेश की वर्षगांठ हम इस महीने की चार तारीख को मनायेंगे, एक बच्चे की बीमारी की चिंता ने धर्म से जोड़ दिया, और पुण्डरीक सूत्र तक पहुंचा दिया, जिसने उनका जीवन पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। सोच के इस तरीके में, क्योंकि हम निश्चित रूप से पीड़ित हैं, हम विभिन्न शिक्षाओं की खोज करते हैं और गंभीरता से विचार करते हैं कि हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या है। सच कहूँ तो, जितनी अधिक हमें पीड़ा मिलती है, उतना अधिक हम बढ़ सकते हैं, और, इसलिए, दुःख मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण अनुभव है।

फिर भी, हमारे मानव स्वभाव में पीड़ा से बचने की इच्छा होती है। इसके अलावा, बहुत से लोग ईमानदारी से महसूस करते हैं कि 'वे दुख के लिए आभारी हैं' ऐसा कहने की कल्पना करना असंभव है।

बेशक, उसमें कुछ भी गलत नहीं है। जैन का वाक्यांश रेइदान जिची (ठंडा या गर्म, आप स्वयं अनुभव करते हैं) का अर्थ है कि आप स्वयं अनुभव करते हैं कि पेयजल ठंडा या गर्म है जब आप वास्तव में इसे पीते हैं। जैसा कि इस वाक्यांश का अर्थ है, कि पूर्व के विभिन्न अनुभवों के उपरान्त ही हम दुःखों और कठिनाइयों को मूल्यवान रूप में स्वीकारना प्रारम्भ कर सकते हैं जिसके लिए हमें आभारी होना चाहिए और अपने लिए यह देखना चाहिए कि "वास्तव में, यह केवल इसलिए है क्योंकि जहाँ पीड़ा है, वहीं खुशी है।"

वह जिसने दुनिया देखी है

शाक्यमुनि ने हमें शिक्षा दी है कि "सभी वस्तुयें दुःख के कारण हैं," जिसका अर्थ है कि हम इस दुनिया में हर चीज से पीड़ा पाते हैं। संस्थापक निवानो ने कहा है कि "सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम इस सत्य को सम्पूर्ण रूप से देखें और इसे दृढ़ संकल्प के साथ स्वीकार करें," और "जब हम ऐसा करते हैं, तो हम समझते हैं कि दुख अब और



असामान्य नहीं है; यह पूरी तरह से जीवन का एक सामान्य भाग है," और "ठीक ही, क्योंकि हम पीड़ा को असामान्य मानते हैं, तो हमें और अधिक दुःख दर्द महसूस होता है और इसकी आशंका करके, हम डरे और असहज बने रहते हैं।"

हालांकि, भले ही हम समझते हैं कि जीवन के दुःख से बचने के लिए हमारे अधीन कुछ करने को नहीं है, फिर भी, इस के लिए क्या करें इसकी हम चिन्ता करते हैं, व्यथित होते हैं और अपने दिन घोर व्यथा में बिताते हैं।

तेन्दाई बौद्ध संप्रदाय के एक महान शिक्षक (दाइ आजारी), यूसाइ साकाइ (1926-2013), ने ऐसे समय के विषय में कहा है कि, "चीजों के बारे में सोचने के लिए लगातार अपना सिर खपाने की जगह, कुछ करने के लिए अपने शरीर का पूर्ण उपयोग करना बेहतर है।"

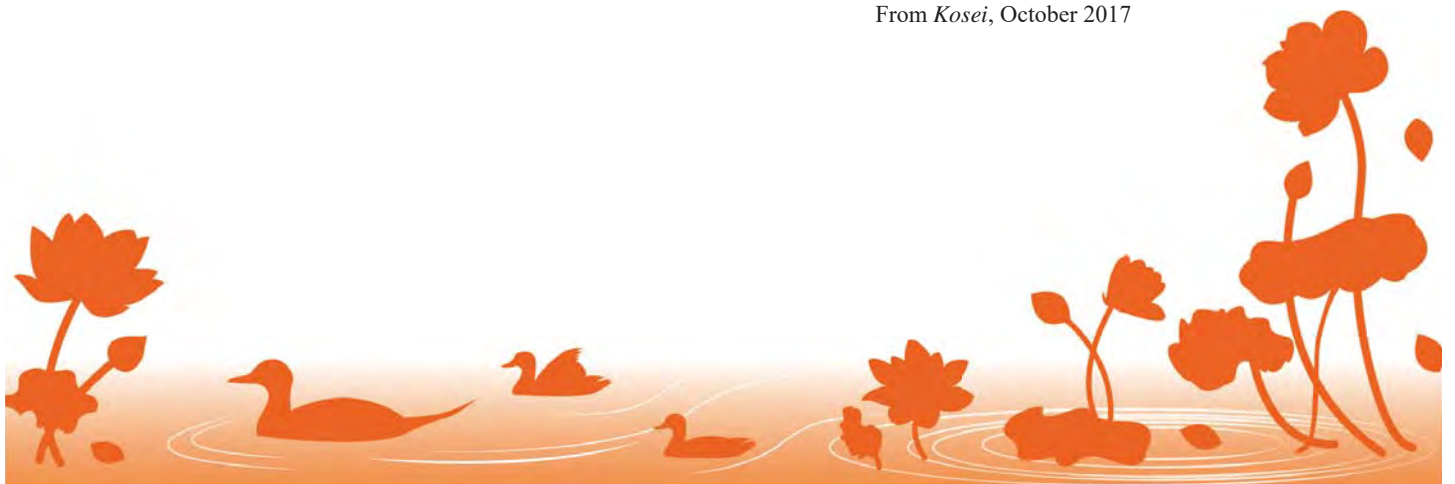
पीड़ा के समय में, जब हम लगातार अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हैं और किसी चीज के बारे में चिंतित रहते हैं, तो हमारा दिमाग असन्तुलित हो जाता है और उद्विग्न रहता है और हमें लगता है कि हमारे दिमाग में समस्या रुक सी गयी है और गोलाकार घूम रही है। दूसरी ओर, जब हम कुछ करने के लिए अपने शरीर का उपयोग करते हैं, तो हम काम से हट्टी टूटने जैसी थकान का अनुभव कर सकते हैं, लेकिन इसमें ऐसी कार्रवाई भी शामिल है जो समस्या को हल करने में हमें एक कदम आगे बढ़ाती है। क्या यह कठिन अनुभव पाने का एक और उदाहरण नहीं है, जैसे "ठंडा या गर्म, आप स्वयं अनुभव करते हैं," जिसका मैंने पहले उल्लेख किया है ?

जापानी शब्द कुरोनिन का अर्थ वह व्यक्ति है जिसने दुनिया देखी है, अर्थात्, वह जिसने कई विफलताओं का सामना किया है, जो समाज की परिस्थितियों से परिचित है और उन अनुभवों को आध्यात्मिक विकास के पोषक तत्वों में बदलने में सक्षम है, और जिसकी पहचान मानव हृदय के विस्तार और गहराई की महानता को प्राप्त पुरुष के रूप में है। शाक्यमुनि, जो सभी लोगों को मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्प थे और जिन्होंने धर्मदेशना का प्रचार प्रसार करने में बड़ी प्रगति की थी, एक ऐसे महान आदर्शों वाले पुरुष थे जिन्होंने दुनिया देखी है।

इस अर्थ में भी, जब आप कुछ दुःख दर्द या कठिनाई का सामना कर रहे हैं, तो क्यों नहीं अपने शरीर को "कुछ करने" के काम में लगाते हैं ? फिर, आपकी मानसिक परेशानियाँ पसीने में बदल जायेंगी जो कुछ हासिल कर लेगा। और इस तरह के अनुभवों से आपकी सोच में गहराई आयेगी, आपका परिदृश्य विस्तृत होगा, मन अधिक लचीला बनेगा, और दूसरों के प्रति आपके विचार को गहरा करेगा, यह सभी आपको अधिक मानवीय अपील देगा।

रिश्शो कोसेइ काइ में, हम अक्सर कहते हैं कि जब आप किसी चीज के बारे में चिंतित हैं, तो आपको उस व्यक्ति की बात सुननी चाहिए जिसकी आपके जैसी चिन्ता है। इसका कारण यह है कि सक्रिय होना और दूसरों के लिए काम करना "स्थिरता" को "कार्रवाई" में बदलने की कुंजी है। इसके अलावा, यह कृतज्ञता की ओर ले जाता है।

From Kosei, October 2017



Childcare lifeline

मैं अपने पुत्र के लिए चिंतित हूँ, जिसे दुल्हन ढूँढने में परेशानी हो रही है

Q

प्रश्न: मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र के लिए पीड़ा में हूँ, जिसका अभी तक विवाह नहीं हो पाया है, यद्यपि वह चालीस से अधिक वर्ष का हो चुका है। मैं और मेरा पुत्र साथ में एक खेतिहर गांव में रहते हैं। चूंकि बहुत से युवा शहर में कार्यरत हैं या नौकरी कर रहे हैं, इसलिए मेरे पुत्र के लिए ऐसी युवती महिलाओं से परिचित होने की संभावनाएं नगण्य है जो शादी करना चाहती हैं। मेरा पुत्र वैसी स्त्री से शादी करने की अपनी इच्छा से समझौता नहीं करना चाहता है, जो मेरे (उसकी माँ के) साथ एक ही घर में रह सकती हैं। हाल ही में, उनके पास लाई गई ओमियाई (शादी हेतु लड़का-लड़की के मिलन की व्यवस्था) की संख्या में हास हो रहा है और इसलिए, मैं अपने पुत्र के भविष्य के बारे में गंभीर चिंता में हूँ।



A

उत्तर: अपने पुत्र के विवाह की आपकी दिली इच्छा और शीघ्रता शीघ्र उसकी सच्ची खुशी की प्राप्ति की कामना को मैं बहुत अच्छी तरह से समझता हूँ। साथ ही, मैं आपके पुत्र की गर्मजोशी के बारे में आश्वस्त हूँ कि ज्येष्ठ पुत्र के रूप में वह आपको हमेशा ध्यान में रखता है। इस रूप में, इस तरह की समस्या इसलिए उत्पन्न हो गयी है क्योंकि आप दोनों को एक दूसरे की चिन्ता है। इसलिए, आप क्यों नहीं इस विषय में अपने पुत्र के साथ, खुले हृदय से और पूरी ईमानदारी से बात करती हैं ?

यह महत्वपूर्ण है कि आप और आपका पुत्र एक दूसरे को समझें और पहचानें, और आप जानें कि आपके पुत्र के मन में क्या चल रहा है, तथा आपने कैसी आकांक्षाएँ मन में दबा रखी हैं। उस आधार पर, आपको अपने पुत्र पर भरोसा करना चाहिए, और उसे स्नेहपूर्वक यह कहकर आगे बढ़ाना चाहिए "मैं बिल्कुल ठीक हूँ, इसलिए तुम अपने लिए अपना रास्ता तय करो।" जब आप दोनों परस्पर विश्वास की पृष्ठभूमि तैयार करेंगे, आपका पुत्र एक वयस्क की तरह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ पहला कदम प्रारंभ करने में समर्थ होगा।

आपके पुत्र को पत्नी की खोज करते हुए, सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए सकारात्मक प्रयास करना होगा, जैसे कि कक्षा के पुनर्मिलन या शादी के इच्छुक वर्ग की पार्टियों में जाना। यद्यपि वह

कभी-कभी यह महसूस कर सकता है कि चीजें वैसी नहीं होतीं जैसा हम सोचते हैं, वह निश्चित रूप से विभिन्न प्रकार के नये अनुभवों का सामना करके अपने आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विकास को प्राप्त करने में सक्षम होगा।

आजकल, अधिक से अधिक महिलायें कृषि कार्य में शामिल होना, या कृषक परिवार में शादी करना चाहती हैं। इस बीच, कृपया समझें कि लोग अक्सर जैसा मानते हैं उसके विपरीत, शादीशुदा जीवन हर किसी के लिए सबसे खुशहाल तरीका नहीं हो सकता है।

माता-पिता को जो खुशी देता है वह है उनके बच्चों के जीवंत, अभिनव और हर्षित जीवन को देखना, चाहे वे किसी तरह की परिस्थितियों या प्रतिबंधों से घिरे हों; और इससे बच्चों की भी खुशी बढ़ेगी।



(टोक्यो अनुसंधान संस्थान के परिवार शिक्षा द्वारा प्रदान उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि "यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा।" "हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंटेशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं।" "Family education from their children" कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये।

माता-पिता और सन्तानों के बीच का बन्धन

एक पुत्र, जो चालीस से उपर की आयु का होने के बावजूद उस स्त्री से शादी नहीं करेगा जो उसकी माँ के साथ एक ही घर में एक साथ रहने के लिए तैयार नहीं है, सहृदय और समर्पित पुत्र है जो दृढ़ आंतरिक शक्ति से सम्पन्न है।

यह सदा सच नहीं होता है कि यदि लोग युवावस्था में शादी करते हैं तो उनका दाम्पत्य जीवन खुशी से भरा होगा। ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने देर से शादी की है और फिर भी उनका दाम्पत्य जीवन आनन्द में है, क्योंकि चीजों को देखने की दृष्टि उम्र के साथ परिपक्व होती है।

प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने अपनी पुस्तक *Kokoro no Manako o Hiraku* (मन की आंखें खोलना) में हमारे लिए सच्ची खुशी के सम्बन्ध में इस प्रकार दिशानिर्देश दिये हैं:

“अपने माता-पिता और सन्तानों से घिरा हुआ; हर दिन सुस्वस्थ रहकर काम करने में, अच्छे भोजन का आनंद लेने में, दूसरों की छोटी सी भी मदद करने में, अनगिनत लोगों के समर्थन के माध्यम से जीवन का उपहार मिलता है: जब आप इन चीजों की पहचान करते हैं, एक एक कर, उनका आंकलन करते हैं और उनके प्रति कृतज्ञ होते हैं, आपके जीवन पथ में आनन्द की बढ़ोतरी होती है, आपकी हँसी बढ़ जाती है, और आपकी खुशी भी बढ़ जाती है।

“यह अहसास होना कि जिन चीजों के लिए आप सबसे अधिक कृतज्ञ हैं, वे चीजें आपके आसपास पहले से ही वर्तमान हैं, यह सच्ची खुशी की खोज है।” (कोसेइ प्रकाशन, 2013, पृष्ठ 289)

इस संबन्ध में बातें करना महत्वपूर्ण है कि आपका पुत्र भविष्य में वास्तव में क्या करना चाहता है, जबकि आप दोनों जो खुशी मिली है उसका पुनः आंकलन करें।

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास डिपार्टमेंट की देख रेख में)



Please give us your comments!



We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus.

E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

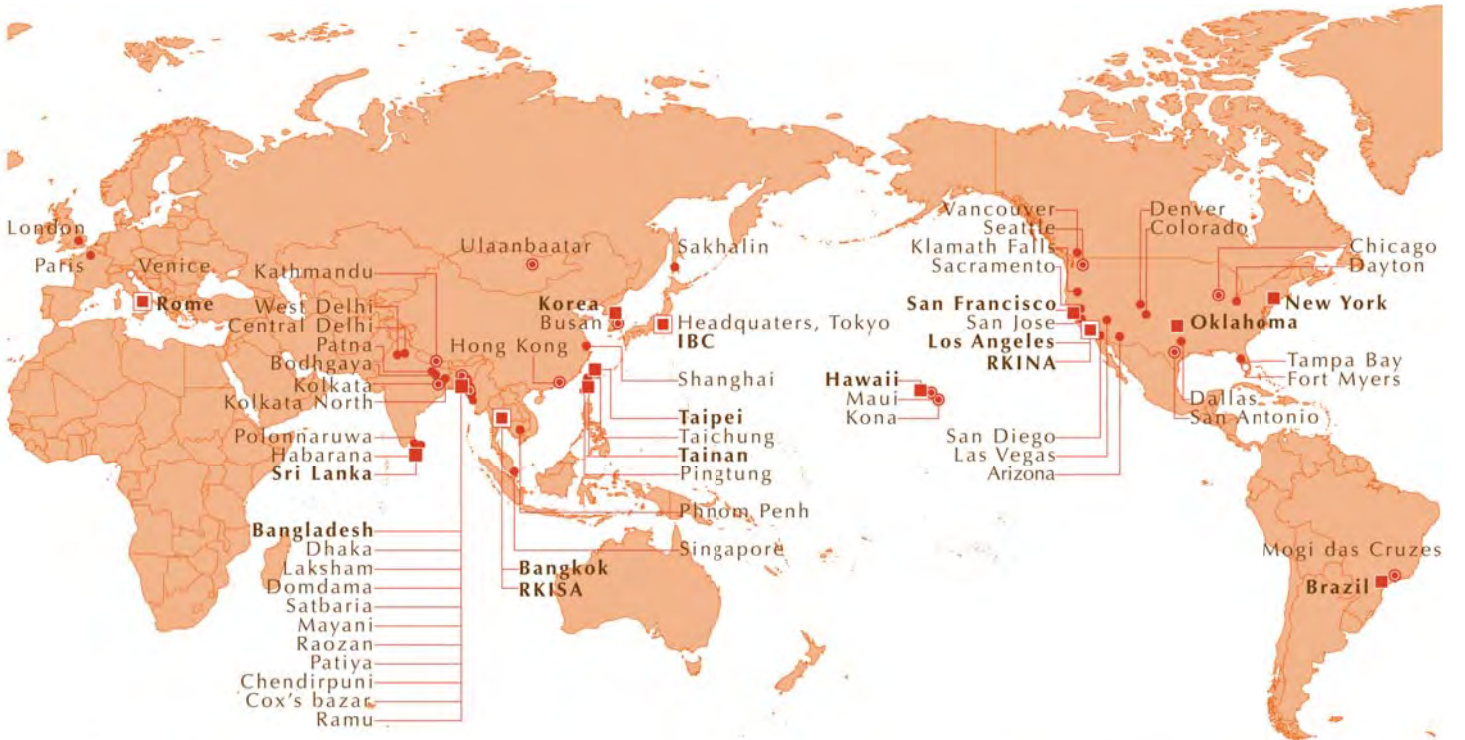
कठिनाइयों का उत्साहपूर्वक सामना करना

यह एक छोटी सी कहानी है जिसे मैंने संयुक्त राज्य अमेरिका के अपने एक मित्र से सुना था। एक सप्ताह के बौद्धावास में भाग लेने वालों के मध्य एक बहुत ही परेशान करने वाला व्यक्ति था, और हर कोई उसे नापसंद करता था। एक दिन, क्योंकि उसे बौद्धावास में रहना असह्य हो रहा था, वह अचानक उस वासस्थान से भाग गया। हर कोई उत्साह के साथ चिल्ला उठा क्योंकि वह चला जा चुका था। तब प्रभारी पुजारी अपनी गाड़ी में बैठकर निकल पड़ा और उस व्यक्ति को वापस ले आया। हर कोई निराश हो गया, और एक लड़के ने पुजारी से दबी आवाज़ में पूछा, “आप उसे वापस क्यों ले आये ?” पुजारी ने उत्तर दिया, “ओह, क्योंकि मैंने उसे काम पर रखा था।”

वास्तव में, इस जीवन में चिंताओं और परेशानियों का कोई अंत नहीं है। मैंने इस महीने के प्रेसिडेंट निवानो के मार्गदर्शन से सीखा है कि हम जीवन के अनुभव से पीड़ित होते हैं या नहीं, यह वैकल्पिक है। हमारे मन की यथास्थिति को समझना और परिस्थितियों एवं अनुभवों के सच्चे अर्थ और मूल्य को पहचानना, जो हमें पीड़ा देते हैं, बुद्ध मार्ग का अभ्यास है। मुझे पता चला कि संस्थापक निवानो कठिन समस्याओं का सीधे सामना करते थे और बड़े उत्साह के साथ करते थे, यह कहकर “अब चीजें दिलचस्प हो रही हैं।” मैं भी कठिनाइयों का सामना उत्साह की भावना से करना चाहूँगा।

शोको मिजुतानी

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय विभाग निर्देशक



Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2017

Rissho Kosei-kai International

3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A.

Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.

Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261

e-mail: rkseattlewashington@gmail.com

http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.

P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, USA

Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745

e-mail: dharmasanantonio@gmail.com

http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.

Tel: (727) 560-2927

e-mail: rktampabay@yahoo.com

http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.

Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633

e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.

Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamelahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.

Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.

Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567

e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.

Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437

e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.

Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499

e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.

Tel: 1-773-842-5654

e-mail: murakami4838@aol.com

http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.

Tel & Fax: 1-405-943-5030

e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls

1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204, U.S.A.

Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419, U.S.A.

http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,

CEP 04116-060, Brasil

Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Fax: 55-11-5549-4304

e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,

CEP 08730-000, Brasil

Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongheng District, Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433

http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,

Taichung City 401, Taiwan

Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 Fax: 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696

e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea

Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,

North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia**

Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris

86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

International Buddhist Congregation (IBC)

3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibc-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center**Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Singapore**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218 e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 Fax: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Other Groups**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**